Report

Geographical Survey of Beri

IN PARTIAL FULFILMENT OF THE REQUIREMENT FOR THE AWARD OF MASTERS DEGREE IN GEOGRAPHY

DEPARTMENT OF GEOGRAPHY

SETH G.B. PODAR COLLEGE

NAWALGARH (RAJASTHAN)

PANDIT DEENDAYAL UPADHYAYA SHEKHAWATI UNIVERSITY, SIKAR

SUBMITTED BY

SONIYA JANGIR

M.A./M.Sc. PREVIOUS

SESSION: 2021-22

DEPARTMENT OF GEOGRAPHY

SETH G.B. PODAR COLLEGE, NAWALGARH

CERTIFICATE OF COMPLETION

GEOGRAPHICAL SURVEY

In Partial Fulfillment of The Requirement For The Award of Masters Degree In Geography (M.A/M.Sc.)

Presented To

Soniya Jangir

For Completing Geographical Survey of

Beri

Prof. Shantilal Joshi
Head of Department

Dr. Satyendra Singh
Principal

सेठ ज्ञानीराम बंशीधर पोदार महाविद्यालय नवलगढ़

सत्र 2021–22

पंडित दीनदयाल उपाध्याय शेखावाटी विश्वविद्यालय सीकर

भौगोलिक क्षेत्रीय अध्ययन रिपोर्ट

निर्देशक

दीपक कुमार

भूगोल विभागाध्यक्ष

सर्वेक्षणकर्ता

नाम– सोनिया जांगिड़

एम.ए./एम.एस.सी. प्रिवियस(भूगोल)

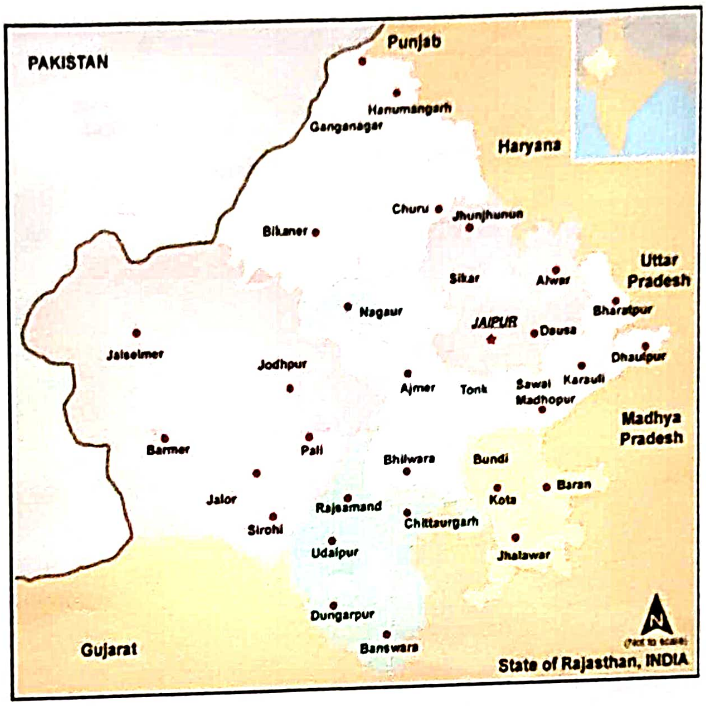
PAKISTAN
Punjab
Hanumangarh
Ganganagar
Haryana
Churu
Jhunjhunun
Bikaner
Uttar Pradesh
Sikar
Alwar
Bharatpur
Nagaur
JAIPUR
Dausa
Dhaulpur
Jaisalmer
Jodhpur
Ajmer
Tonk
Sawai Madhopur
Karauli
Madhya Pradesh
Barmer
Pali
Bhilwara
Bundi
Baran
Jalor
Rajsamand
Kota
Sirohi
Chittaurgarh
Udaipur
Jhalawar
Dungarpur
Banswara
Gujarat
N
State of Rajasthan, INDIA

जलवायुः–

जलवायु के अन्तर्गत तापमान, वर्षा, आर्द्रता तथा पवनों की दिशाओं का विश्लेषण किया जाता है। अधिकतर क्षेत्र की जलवायु बड़ी विषमता लिए हुए है। इस क्षेत्र के अन्र्तगत वार्षिक वर्षा का औसत 50 सेन्टीमीटर है। परन्तु वर्षा के यह औसत निश्चित नहीं है। कभी–कभी वर्षा की मात्रा औसत से न्यूनतम हो जाती है। इस क्षेत्र में अधिकांश वर्षा दक्षिणी–पश्चिमी अरबसागरीय मानसुनी पवनों के द्वारा सर्वप्रथम होती है जब अरबसागरीय मानसुन अधिक सक्रिय होता है तो वर्षो अधिक मात्रा में होती है, ता वर्षो का औसत घट जाता है। परन्तु यहा पर शीतऋतु में वर्षा उतरी पूर्वी शीतकालीन मानसुनी हवाओं तथा भूमध्यसागरीय विक्षोभो द्वारा होती है, परन्तु मानसुन द्वारा वर्षा की मात्रा कम हो जाती है, जिसे स्थानीय भाषा में मावठ कहते हैं, मावठ रबी की फसल के लिए बड़ी लाभदायक मानी जाती है मावठ की फसल का सर्वाधिक लाभ गेंहूँ की फसल को होता है।

बेरी गांव राजस्थान के अर्द्वशुष्क जलवायु क्षेत्र के अंतर्गत आता है गर्मियों का औसत तापमान 49 डिग्री सेन्टीग्रेड जुन तथा मई के महीने में अंकित किया जाता है। चूंकि यहा पर ग्रिष्मकाल में उतर–पश्चिम से गर्म हवाऐं चला सकती है जिन्हें स्थानीय भाषा में लू कहा जाता है। इन्हें ताप लहरी हवाएं भी कहा जाता है। जिन्हें स्थानीय भाषा में लू के नाम से पुकारा जाता है। लू के कारण कभी–कभी लोगों कि मृत्यू तक हो जाती है। ग्रीष्मऋतु का आगमन मार्च के बाद यहा का तापमान निरन्तर बढ़ने लगता है तथा हवाएं उतर–पश्चिमी से चलना प्रारम्भ हो जाती है और इन हवाओं की गति मई–जून में अत्यधिक रहती है। मई–जून में हवाओं का औसत वेग रहता है। ताप लहरी हवाओं के साथ–साथ धुल भरी हवाएं चलने लगती है। राजस्थान में धुलभरी हवाओं की सर्वाधिक संख्या गंगानगर में तथा सबसे कम झालावाड़ में तथा इस क्षेत्र में अक्टुम्बर तथा नवम्बर में हवाओं की गति मंद होती है तथा ये दोनों मैप शान्त दिनों वाले कहलाते है, नवम्बर के बाद में गुलाबी शर्दी का आगमन हो जाता है आगे चलकर दिसम्बर जनवरी में तापमान 0 डिग्री सेन्टीग्रेड हो जाता है तथा डुण्डलोद गांव का इस वर्षा का जनवरी महिने में 10 या 11 दिनांक को न्यूनतम तापमान 0.5 सेन्टीग्रेड अंकित किया गया, कभी–कभी तापमान के 0 डिग्री से कम हो जाने पर बर्फ जम जाती है।

भौगोलिक स्थिति एवं विस्तार–

बेरी गांव का अक्षांशीय विस्तार 27 डिग्री 50 मिनट उतरी अक्षांश तथा 75 डिग्री 15 मिनट उतरी अंक्षाश से 75 डिग्री 20 मिनट पूर्वी देशान्तर के मध्य स्थित है। बेरी गांव के उतर तथा पश्चिम भाग में मुख्य बाजार स्थित है। इस गांव की बसावट आयताकार रूप में बसी हुई है। राज्य राजमार्ग 1.5 किलोमिटर अन्दर की ओर स्थित है। यह मार्ग जयपुर से सीकर से होता हुआ, झुझुनू से पिलानी की ओर जाता है।

भौतिक स्वरूप–

बेरी गांव जलवायु की दृष्टि से कॉपेन महोदय तथा थार्नवेट महोदय के अनुसार विभाजित जलवायु वर्गीकरण के अनुसार अर्द्ध मरूस्थलीय क्षेत्र के अंर्तगत आता है। चुंकि इस गांव का अधिकाश भाग मैदानी रूप में फैला हुआ है तथा इस गांव के उतर में पश्चिम से उतर दिशा की ओर बालुका स्तुप स्थित है। चूंकि नवलगढ के सम्पर्ण क्षेत्र का 30 भाग मरूस्थलीय टिलों तथा समतल मैदानी भाग है। इस गांव में कोई भी पर्वतीय भु–भाग स्थित नहीं है।

अपवाह तंत्र–

बेरी गांव आन्तरिक अपवाह तंत्र के अंन्तर्गत आता है। इसलिए यहा पर नदियों का अभाव बना हुआ है। वर्ष 1965 में खण्डेला की पहाड़ियों से चिराणा नदी का पानी इस गांव में प्रवाहित होती हुई उतर पश्चिम में निकलकर राजपुरा गांव के निकट पहॅुच गया था इसके पश्चात यहां पर कोई भी नदी नही आयी है। चूंकि निरंतर वर्षा का औसत कम होने के कारण चिराणा नदी इस गांव में पहुचने से पहले ही विलुप्त हो जाती है छपनया अकाल में कान्तली नदी में तेज बहाव के कारण इस नदी का जल इस गांव में तेज गति से पहुंचा था जिसके कारण झुग्गी–झोपड़ियों व आवासों को बड़ा नुकसान पहुंचा था और इस नदी का पानी आगे चलकर कटेह बीहड़ तक पहॅुच गया था, अपवाह तंत्र की दृष्टि से इस गांव का उतर–पश्चिम तथा उतर पूर्वी भाग उच्चावच की दृष्टि से उच्च है। तथा दक्षिणी पूर्वी एवं दक्षिणी–पश्चिमी भाग निचाई पर स्थित है, जिसके कारण बरसात का पानी तथा सीवरेज का पानी इस निचले भू–भागों में प्रवाहित होकर इकट्ठा हो रहा है।

परिचयः—

सीकर की स्थापना राव दौलत सिंह ने 1687 ई. में की थी। मारवाड़ी समुदाय के कई महान व्यापारिक परिवार बेरी मूल के हैं। इनकी पर्यटन एवं सांस्कृतिक कार्यो में बड़ी रूची थी तथा इनके चार पुत्र सात रानियाँ थी बेरी गांव से झुंझुनू मार्ग पर 8 किलोमिटर दूर उतर में स्थित है। आज बेरी की दशा व आकृति में निरन्तर परिवर्तन देखने को मिल रहा है। सामाजिक राजनीतिक व आर्थिक दृष्टि से उभर रहा है। जो शेखावाटी में अपना नाम कमा पा रहा है। धीरे—धीरे बेरी के समीप होन से इसके विकसीत होने पर बल मिल रहा है। नवलगढ़ शहर में जनसंख्या का निरन्तर विस्तार हो रहा है क्योंकि यहां सांस्कृतिक धरोहर पायी जाती है। जो पर्यटन में बढ़ोतरी हो रही है। जो आर्थिक बढ़ोतरी का स्वस्थ बना रहा है।

बेरी के पूर्व में बलरिया गांव तथा पश्चिम में बीदसर, कल्याणपुर तथा उतर पश्चिम में मिर्जवास और दक्षिण में सीकर स्थित है। बेरी गांव तहसील की प्रमुख ग्राम पंचायत हैं। बेरी गांव राजस्थान का पहला गांव था, जो इंटरनेट की सेवाओं से जुड़ा था तथा सर्वप्रथम सीकर जिले के इसी गांव में यूको बैंक की स्थापना हुयी थी इस गांव में भारत का प्रसिद्ध मारवाड़ी घोड़े या मालानी नस्ल के घोड़ो का प्रजनन केन्द्र स्थित है। तथा यहां पर राजस्थान का गदर्भ केन्द्र स्थित है।

जनसंख्याः—

बेरी गॉव में संघन जनसंख्या का जमाव पाया जाता है आबादी क्षेत्र में जनसंख्या वितरण अधिक तथा बाहरी भागों में (खेतों में) जनसंख्या का वितरण कम है यहां कि कुल जनसंख्या 4483 है जिनमें से एस.सी के लोग 2298 एस.टी के 1765 तथा अन्य लोगों की संख्या 3140 है। इस गॉव में पाई जाने वाली जनसंख्या का वितरण निम्न तालिक में दिया जा रहा हैः—

तालिका संख्या 3

क्र सं.	गॉव का नाम	S.C	S.T	अन्य लोग	कुल जनसंख्या
1	बालाजी का नाडा	950	620	1150	2720
2	नया जोहड़ा	620	510	970	2100
3	धर्मशाला	728	635	1020	2383
	योग	2298	1765	3140	4483

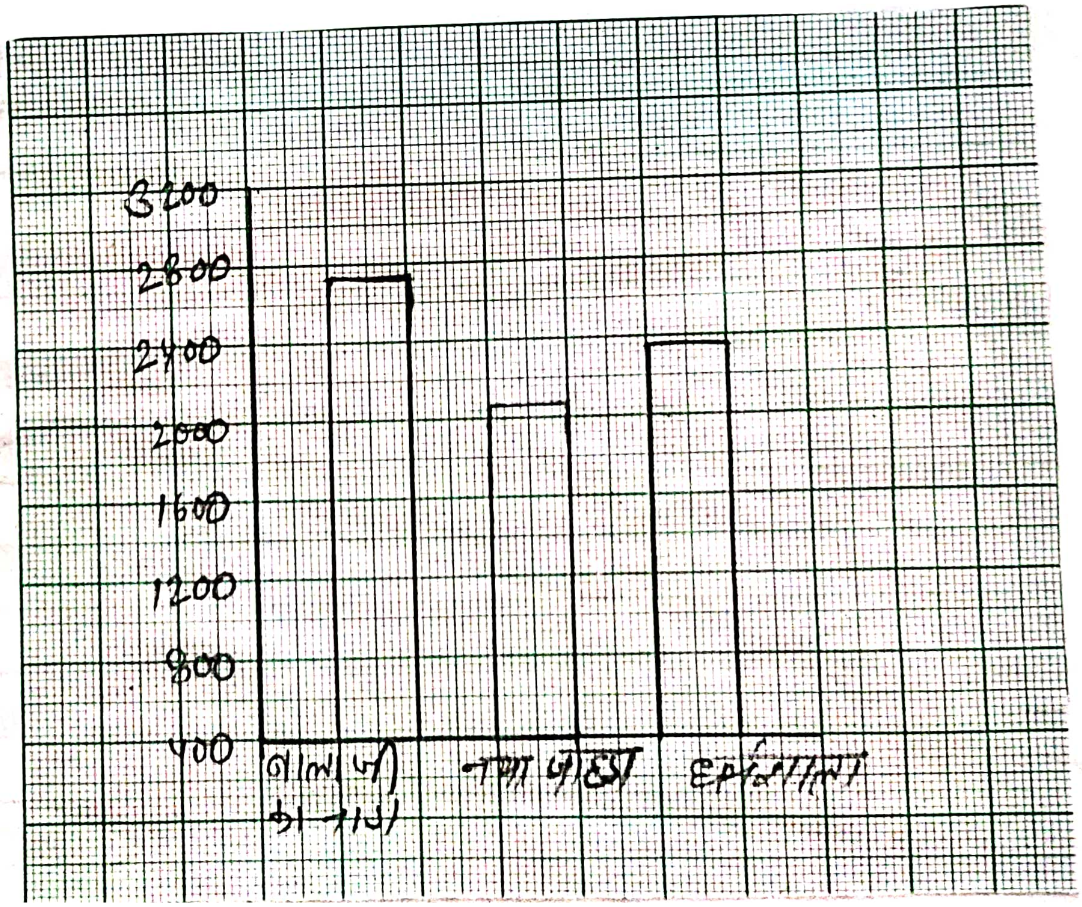

तालिका संख्या–2

क्र.सं.	गांव	कुएँ	नलकुप	हैण्डपम्प	कुलयोग
1	बालाजी का नाडा	72	14	3	89
2	नया जोहड़ा	61	17	6	83
3	धर्मशाला	68	23	4	95
	कुल	201	54	13	267

उपरोक्त आंकड़ो की सहायता से मिश्रित रेखाचित्र द्वारा इनका निरूपण किया जा सकता है:–

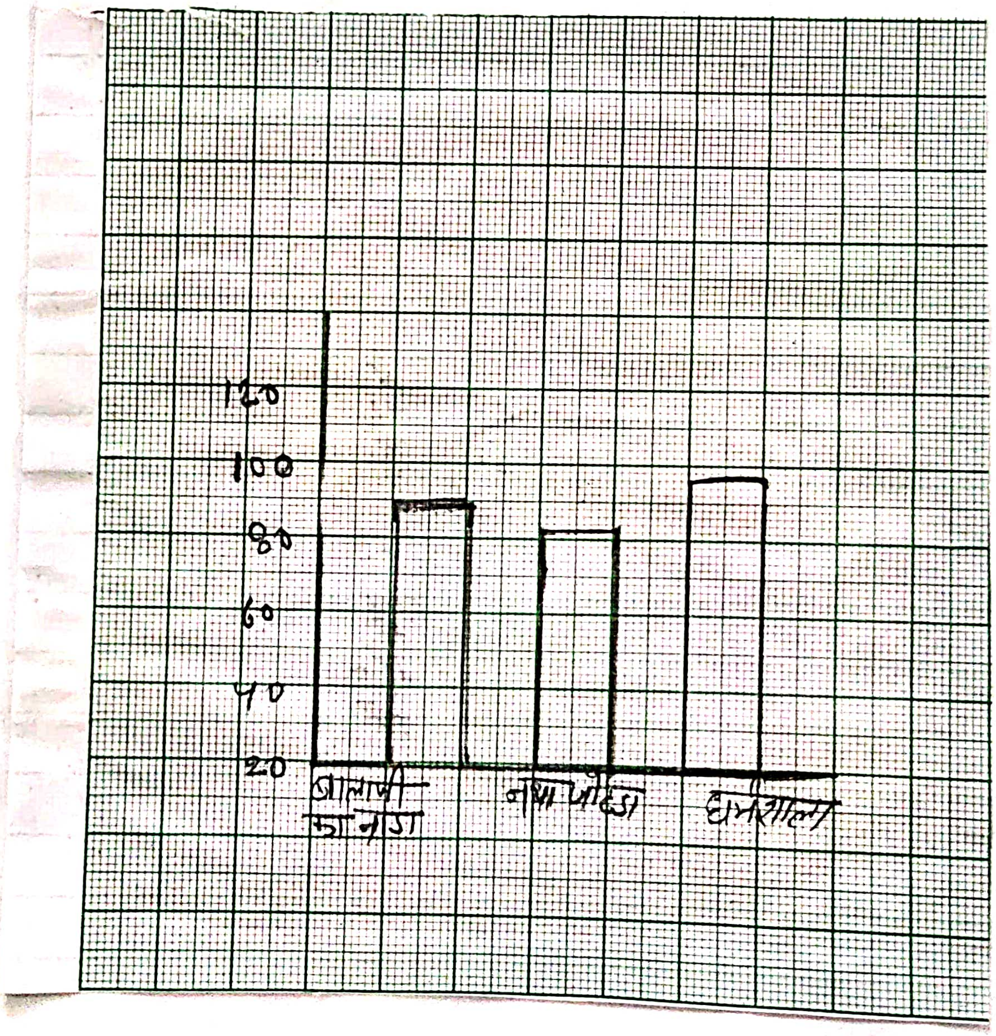

स्वास्थ्य सुविधाएंः–

बेरी गांव में सरकारी तथा गैर सरकारी स्तर पर कई स्वास्थ्य केन्द्र बने हुए है। सरकारी हॉस्पिटल में प्रतिदिन लगभग 70 मरीजों का इलाज डॉ. भास्कर बी. रावल द्वारा किया जाता है जबकि प्राथमिक उपस्वास्थ्य केन्द्र में डॉ. निर्मला देवी द्वारा लगभग 50 मरिजों का इलाज व दवाई वितरित की जाती है। यहां पर टीकाकरण की भी व्यवस्था है। बेरी गांव में एक प्राथमिक उप स्वास्थ्य केन्द्र, एक गोयनका निजी स्वास्थ्य केन्द्र स्थित है जहां पर प्रतिदिन मौसमी बिमारियों का इलाज के लिए आस–पास के लोग आते रहते है इनके द्वारा टि.बी. टाइफाइड व फेफड़ों से सबन्धित रोगों का निदान किया जाता है।
पशुओं के लिए भी एक पशु चिकित्सा केन्द्र स्थापित है गाय, भैंस, ऊंट, बकरी,भेड़ का इलाज इस प्रकार किया जाता है। इस केन्द्र में टिकाकरण कृत्रिम गर्भादान तथा मौसमी बिमारियों की रोकथाम हेतु इलाज किया जाता है। गांव में स्वास्थ्य सुविधाओं की पर्याप्त सुविधाएं है प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र की संख्या 1 तथा उपस्वास्थ्य केन्द्र की संख्या 1 एवं होमियोपेथिक चिकित्सालय की संख्या 1 है और इसी प्रकार पशू चिकित्सालय 1 है।

अधिवासः–

बेरी गांव में अधिवासों का प्रमिरूप चौक पट्टीनुमा है। इसके साथ–साथ कुछ घर तीरनुमा प्रतिरूप का मिक्षित प्रतिरूप में भी बसे हुए है। नवलगढ़ बस स्टैण्ड से डुण्डलोद गढ़ तक सीधा मार्ग है तथा इस मार्ग के दोनों किनारों पर घर बने हुए हैं तथा मस्जिद, बेरी गांव कि हवेलियों तथा ग्राम पंचायत के चारों और वृताकार रूप में घर बने हुए हैं अधिकांश घर सीमेन्ट कंकरिट तथा लोहे के मिश्रण से निर्मित पक्के अधिवास है परन्तु कुछ संख्या में गरिबी रेखा से निचे जीवने यापन करने वाले लोगों की संख्या 115 है जिनके घर कच्ची ईटों से निर्मित है इस गांव में 1 मंजिल से लेकर बहू मंजिल तक इमारते बनी हुई है। यहां की हवेलियां, गढ़, छतरियां तथा मन्दिर पुरानी तकनीकों विधियों पर आधारित है जिनकी चित्र शैली ओर विधि शैली अद्भूत है जलवायू का घरों की बनावट तथा प्रका में विशेष ध्यान रखा गया है। गांव में 20 प्रतिशत पक्के मकान 15 प्रतिशत अर्द्व पक्के मकान तथा 5 प्रतिशत कच्चे अधिवास निर्मित है। तथा बेरी गांव में कोई भी अधिवास योग्य नहीं स्वीकृत हुआ है यह स्थिति वर्ष 2015–16 में फरवरी माह तक की है।

कृषिः—

अध्ययन क्षेत्र में प्रमुख रूप से रबी खरीफ की फसलें उत्पन्न की जाती है तथा गांव के आसपास छोटे मैमाने पर जायदा की फसलें भी विकसित कि जा रही है। रबी की फसल के अन्तर्गत गेंहू, जौ, सरसों, मैथी, तारामीरा तथा खरीफ की फसल के अन्तर्गत बाजरा, चोला, मुंग व गवार एवं ज्वार तथा जायदा कि फसल के अन्तर्गत तरबूज, खरबूजा, ककड़ी, टिन्डा, भिन्डी इत्यादि विकसीत किये जाते है वर्तमान समय में इन फसलों के उत्पादन बढ़ाने के लिए आधुनिक तकनिकी तथा पद्वतियों पर आधारित फसले उगायी जाति है रबी की फसल अक्टुबर नवम्बर में बोई जाति है तथा सिंचाई का कार्य कुए, नलकुप के द्वारा किया जाता है। खरीफ की फसल जुलाई, अगस्त में बोई जाति है तथा अक्टुबर में काट ली जाति है इस की फसल की पैदावार वर्षा पर निर्भर है परन्तु वर्षा समय पर ना होने पर तथा वर्षा जाति है जायदा की फसल को पानी की आपूर्ति सिंचाई के साधनों द्वारा की जाति है जायदा की फसल की बुआई रबी की फसल के पश्चात की जाति है ये फसल पूर्णतः सिंचाई पर आधारित होने के कारण छोटे पैमाने पर विकसीत की जाती है। उपयोग तथा अन्य रसायनों का उपयोग किया जा रहा है। बढ़ती हुई आबादी के दबाव से मृदा अनुपजाऊ खारीयकरण तथा कई अन्य समस्याओं से ग्रसित होती जा रही है इस समस्या के समाधान के लिए ग्राम पंचायत स्तर पर मिट्टी की बार–बार जांच व परिक्षण करवाया जाता है कृषकों को मिट्टी की उवर्वरता बनायीं रखने के लिए नई–नई तकनिकी व पद्वतियों से अवगत कराया जाता है।

व्यापार व वाणिज्यः–

गांव की अधिकांश द्वितीयक तृतीयक व्यवसायों में संलगन है। इस गांव में कृषि पशु पालन आदि आधुनिक तकनीकी पर आधारित है। इस क्षेत्र के ग्रामवासी भारत के बड़े–बड़े नगरों में औधोगिक कार्यो से जुड़े हुए है यहां के सेठ, साहुकारों ने गांव का विकास करके गांव में औधोगिक भू दृश्य विकसीत किया है। इस गांव में बैंकिग संचार तथा अन्य आर्थिक कार्यो में लोगों की अच्छी रूची बनी हुई है। यहां के कृषि उत्पादों में जैविक उत्पाद पर विशेष ध्यान दिया गया है तथा पशुपालन अंतराष्ट्रीय स्पर पर ख्याति प्राप्त है।

प्राकृतिक वनस्पतिः–

अध्ययन क्षेत्र में प्राकृतिक वनस्पति का विवरण बहुत ही कम है तथा वनस्पति की सघनता कम होने के साथ–साथ यहां पर ऊष्ण कटिबधीय गुण वाली वनस्पति पाई जाति है। चूंकि बेरी अर्द्ध शुष्क जलवायू के अन्तर्गत स्थित होने के कारण इस क्षेत्र में अर्द्ध शुष्क या अर्द्ध मरूस्थलीय वनस्पति पाई जाति है प्राकृतिक वनस्पति के विकास में जलवायू तथा मृदा का महत्वपूर्ण योगदान होता है दस क्षेत्र के अन्तर्गत खेजड़ी बबूल कंटिली झाड़ियां नीम, सीसम, बरगद, शहतूत, नींबू, पपीता, अमरूद, इत्यादि फलों वाले पौधे भी उपलब्ध है। वर्तमान समय में यहां पर बागवानी पौधों के विकास पर ध्यान दिया जा रहा हैं परिणामतः घरों तथा खेतों में बड़े पैमाने पर फलदार पौधें विकसित हो रहे है। यहा पतझड़ वृक्ष भी उपलब्ध है जो ग्रीष्म ऋतु आने से पूर्व ही अपने पते गिरा देते है चूंकि अध्ययन क्षेत्र में चारागाह का कोई क्षेत्र चिन्हित नहीं किया गया है।

शिक्षा का स्तरः—

बेरी गांव में शिक्षा की दृष्टि से अच्छा वातावरण बना हुआ है प्राचिन कालन से ही यहां पर शैक्षणिक दृष्टि से राजकीय सीनीयर सैकण्डरी स्कूल संचालित थी। इसका निर्माण नवलगढ़ शहर के प्रसिद्व सेठ रामचन्द्र राजकीय द्वारा करवाया गया था वर्तमान समय में शिक्षा का स्वरूप बदल गया है यहां सी.बी.एस.सी से मान्यता प्राप्त 4 स्कूलों तथा दो डिग्री कॉलेज एक पोलॉटेकनिकल कॉलेज, 9 मीडिल स्कूलों, दो आई.टी.आई कॉलेज. 2 बी.एड कॉलेज. 12 प्राईमरी स्कूल निजी क्षेत्र तथा सरकार द्वारा संचालित है इसके अतिरिक्त शेखावाटी क्षेत्र की प्रमुख इंजिनियरिंग कॉलेज भी शामिल है यह क्षेत्र डिग्री, शिक्षा तथा प्रशिक्षण पाठ्यक्रम उपलब्ध कराने के साथ—साथ तकनीकी शिक्षा में भी अग्रणी बना हुआ है इसी कारण क्षेत्र में आस—पास लोग आकर अध्ययन करते है तथा अध्ययनरत विधार्थियों के लिए उतम गुणों के छात्रावासों की व्यवस्था बनी हुई हैं।

उधोग धन्धेः–

बेरी गांव के वार्ड नम्बर 3 में सर्वेक्षण के आधार पर कोई भी बड़ा उधोग धन्धा नहीं था। यह मुस्लिम मोहल्ला होने के कारण छोटी–छोटी चुड़ियों की दुकाने तथा चुड़ियों का कार्य घरों में किया जाता है इन चूड़ियों की कीमत 100 से 5000 रूपये तक है चुड़ियों लाख द्वारा निर्मित होती है तथा इन पर विभिन्न प्रकार की डिजाइन तथा तरासकर आधुनिक रूप दे दिया जाता है जो सुन्दरता की दृष्टि से अच्छी लगती है इसके साथ–साथ इस क्षेत्र में दवाईयों की दुकानें स्थित है। गॉव में एक ऑयल मिल भी स्थित है वह भी वर्तमान समय में बंद की स्थिति में है।

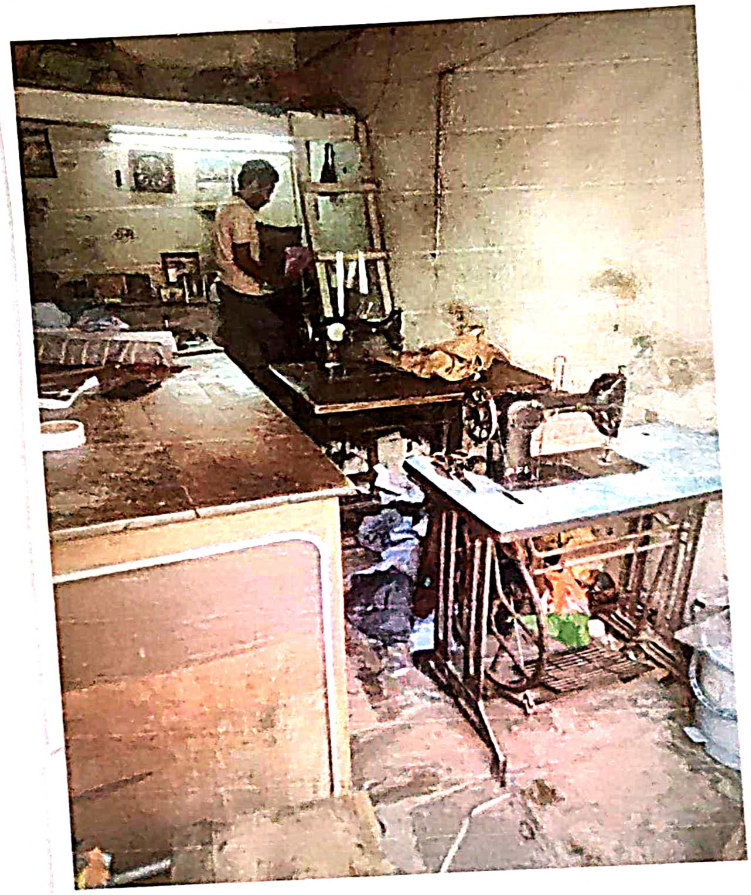

पशु सम्पदाः—

बेरी गांव में पशु सम्पदा की दृष्टि से शेखावाटी में अपना महत्वपूर्ण स्थान रखता है यहां पर उतम नस्ल की गायें, भेड़,बकरी, ऊट, गधे पाये जाते है। बेरी गांव का अश्व प्रजनन केन्द्र तथा कामधेनू गौशाला अपना विचित्र स्थान लिये हुए है कामधेनु गौशाला की स्थापना वर्ष 2008—09 में बुद्धगिरी ट्रस्ट फतेहपुर द्वारा किया जाता है। यह गौशाला 40 बिघा क्षेत्र में फैली हुई है। इस गौशाला में एक ट्यूबवेल व नलकूप बना हुआ है जो गायों को पानी तथा चारा

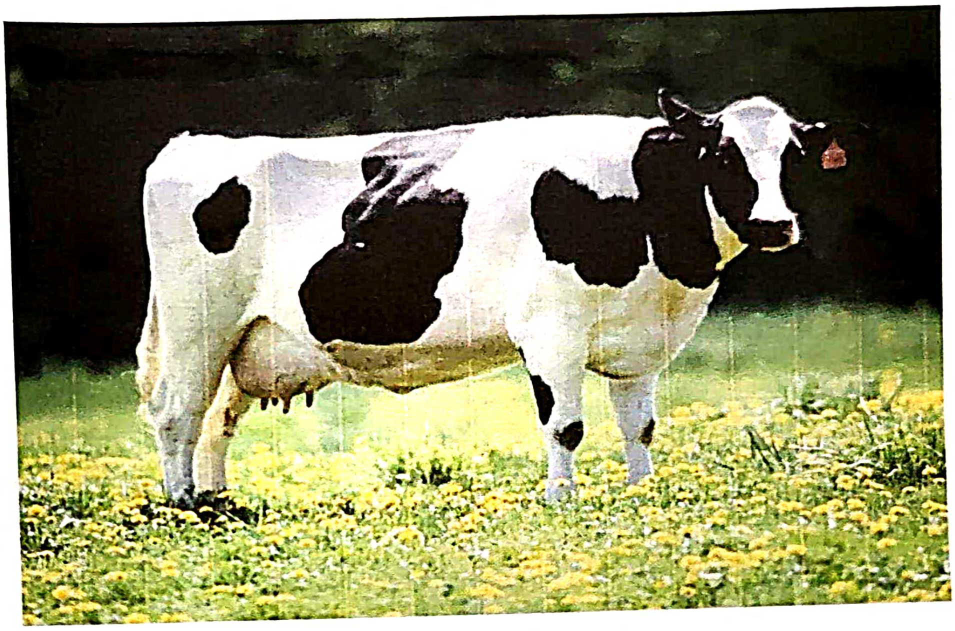

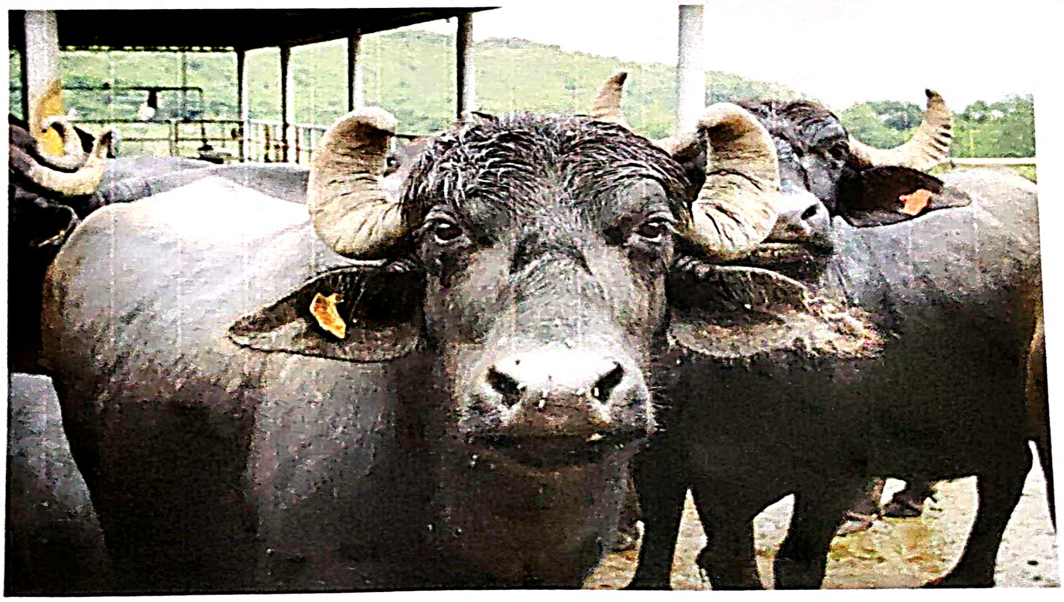

प्रमुख तीर्थ व पर्यटन स्थलः–

बेरी गांव पर्यटन की दृष्टि से शेखावाटी में महत्वपूर्ण स्थान रखता है इस गांव में पर्यटन एवं ऐतिहासीक स्मारकों की दृष्टि से विभिन्न हवेलियों तथा बेरी गांव को देखने के निए विदेशों से बड़ी संख्या में पर्यटक आते रहते हैं बेरी गांव का गढ़ मुख्य आकर्षण का केन्द्र है जिनके चारों ओर नहर बनी हुई है तथा यह लगभग 8 हैक्टर में फैला हुआ है इस गढ़ में विशेष तौर से दिवान खास, सूर्य घड़ी तथा दु–छता महत्वपूर्ण है।

दिवाना खास में राजा तथा रानीयां निवास करती थी, तथा दु–छता में अनेक भिति चित्र तथा रानीयों के सजावट की सामग्री एकत्र है। सूर्य घड़ी अब भी सामान्य घड़ियों की भांती समय का सही निर्धारण कर पाती है। इस गढ़ में कई फिल्में तथा सीरीयल बनाये गये है। राजा का बाजा, बिनणी वोट देनी वाली तथा विदाई इत्यादि फिल्मों की शूटिगं की जा सकी है तथा बकरा सीरीयल भी यही से फिल्माया गया है।

खनिज सम्पदाः–

वर्तमान समय में बेरी गांव में किसी प्रकार के खनिज का विशेष तौर पर खनन नहीं किया जा रहा है। नई खोजों तथा शोधकार्यो के आधार पर इस क्षेत्र में खनिज उपलब्ध होने की सम्भावनस है।

गोयनका हवेली का म्यूजियम प्राचिन परम्पराओं तथा वेशभूषा एवं अन्य कार्यो के लिए विचित्र शैली में बना हुआ है यहां श्याम मंदिर, ठाकुर जी का मंदिर, संतोषि माता का मंदिर, हनुमान जी का मंदिर तथा पोलो ग्राउण्ड इत्यादि महत्वपूर्ण पर्यटन स्थल तथा धार्मिक तिर्थ स्थल है। इन सामारिक स्थलों का भ्रमण करने के निए हजारों विदेशी सैलानी आते रहते हैं।

संचार व मनोरंजन साधनः–

किसी क्षेत्र के विकास का परिचायक संचार एवं मनोरंजन के साधनों पर निर्भर करता है। चूंकि बेरी गांव में 6 मोबाइल टावर जो विभिन्न कंपनियों से संबंधित है एक पोस्ट ऑफिस तथा 85 प्रतिशत लोगों के घरों में टेलिविजन गति के संचार के साधनों में मोबाइल सुविधा उपलब्ध है गॉव के मध्य में मुख्य पोस्ट ऑफिस स्थित है जिसके अन्तर्गत रजिस्ट्री, स्पीड पोस्ट, सी.टी. सी. तथा मनीआर्डर की सुविधा उपलब्ध है।

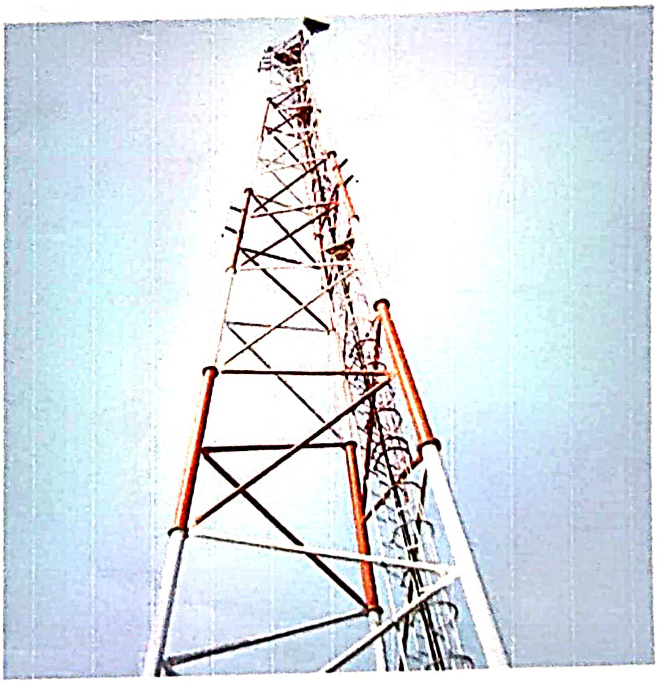

परिवहन के साधनः–

किसी क्षेत्र के आर्थिक विकास में परिवहन के साधनों का बहुत बड़ा योगदान है इनके द्वारा आवश्यक माल को मांगने, अतिरिक्त उत्पादन को बाहर भेजने एवं अपने क्षेत्र में नवाचारों के आने का महत्वपूर्ण कार्य सम्पादित होता है। चूंकि बेरी गांव सड़क व रेल परिवहन से जुड़ा हुआ है।

जयपुर–लोहारू राज्य राजमार्ग गांव की सीमा को दक्षीण से उतर दिशा की ओर स्पर्श करता हुआ गुजरात है जो गांव को अन्य नगरों, कस्बों, जिला मुख्यालयों तथा राजधानी से जोड़ता है। गांव के अन्दर 4 किलोमीटर पक्की सड़क(डामर युक्त) 3 किलोमिटर सीमेंट सड़क तथा 10 किलोमिटर कच्ची सड़क(ग्रेवल रोड़) है जो गांव की गलियों को गांव के चौक से तथा चौक कसे अन्य पड़ौसी गांवों नगरों, जिलों तथा राजधानियों से जोड़ने का कार्य करती है।

यातायात के साधनों में यहां बस,ट्रक, जीप, कार, मोटर साईकिल, साईकिल, ऊंटगाड़ी(लगभग 45), बेलगाड़ी(लगभग 13), गधागाड़ी(लगभग 20) तथा घोड़ा गाड़ी(लगभग 5) आदि नये व पूराने तथा तिव्र व मंदगती वाले यातायात के साधन विकसित है।

1. गांव में बढ़ती हुई जनसंख्या तथा प्रदूषण के अन्य कारको गांव का प्राकृतिक सौन्दर्य व वातावरण पर विपरित प्रभाव पड़ने है।
2. गांव में चारागाहों के अभाव के कारण मरूस्थलीकरण की प्रक्रिया तेजी से आगे बढ़ रही है।
3. वनों के अत्यधिक दोहन के कारण अध्ययन क्षेत्र की जलवायु तथा पशुओं के लिए चारागाहों पर प्रतिकूल प्रभाव दृष्टिगत हो रहा है।
4. अत्यधिक जनसंख्या वृद्धि के कारण गांव में गरीबी का स्तर बढ़ने लगा है बी.पी.एल तथा ए.पी.एल परिवारों की संख्या में वृद्धि होने लगी है। गांव में शराब की दुकाने, तम्बाकू व गुटखों की दुकाने जगह–जगह पर बनी हुई है। जिससे ग्रामवासियों को धुम्रपान की आदत पड़ गयी है।
5. गांव में नालियों की सफाई समय–समय पर नहीं होने के कारण गन्दगी फैलती रहती है जिसके कारण मौसमी बिमारियों का प्रकोप बना रहता है।
6. बेरी गांव में पर्यटकों की संख्या प्रतिवर्ष बढ़ती जा रही है जिसके कारण ग्रामवासी देशी विदेशी संस्कृति को अपनाने लगे है। फलतः भारतीय संस्कृति एवं परम्परा अपना अस्तित्व खो रही है।